



Study AV Kand 8 Hindi

अथर्ववेद 8.2.21

सृष्टि की अवधि

शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृष्णः ।
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहणीयमानाः ॥21॥

(शतम्) सौ (ते) आपके लिए (अयुतम्) दस हजार (हायनान्) वर्ष (द्वे) दो (युगे) युग (त्रीणि) तीन (चत्वारि) चार (कृष्णः) मैंने बनाये (इन्द्राग्नी) सर्वोच्च नियंत्रक तथा सर्वोच्च ऊर्जा (विश्वे देवाः) सब दिव्य शक्तियाँ (ते) वे (अनु मन्यन्ताम्) अनुकूल रहने वाले (अहणीयमानाः) संकोच या संदेह के बिना ।

व्याख्या :-

सृष्टि की अवधि क्या है?

सृष्टि निर्माण के समय मानवीय अस्तित्व के साथ दिव्य शक्तियों को किसने संयुक्त किया?

मैंने तुम्हारे लिए दो, तीन और चार के साथ सौ दस हजार वर्ष की सृष्टि बनाई है ।

इन्द्र अर्थात् सर्वोच्च नियंत्रक तथा अग्नि अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा और अन्य सभी दिव्य शक्तियाँ किसी संकोच या संदेह के बिना मनुष्यों के अनुकूल रहेंगी ।

जीवन में सार्थकर्ता :-

इस सृष्टि की आयु की गणना किस प्रकार की जाये?

इस मन्त्र में सृष्टि की आयु दी गई है — सौ दस हजार से पूर्व दो, तीन और चार लगाकर संख्या प्राप्त होती है — 4,32,000,000, इस आयु को चार युगों में 4:3:2:1 के अनुपात में बांटा गया है — सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग । इस प्रकार सतयुग की आयु 17,28,00,000 वर्ष है, त्रेता युग की आयु 12,96,00,000 वर्ष है, द्वापर युग की आयु 8,64,00,000 वर्ष है तथा कलियुग की आयु 4,32,00,000 वर्ष है ।

सूक्ति :- (शतम् ते अयुतम् हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृष्णः — अथर्ववेद 8.2.21) मैंने तुम्हारे लिए दो, तीन और चार के साथ सौ दस हजार वर्ष की सृष्टि बनाई है ।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171